Chapter-6

# षष्ठम अध्याय

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की अवधि में विभिन्न लोक संगीत कलाकारों, गायकों एवं जगत के अग्रणियों, जाति विशेष कलाकारों से सम्पर्क साधने का अवसर प्राप्त हुआ ।

माण्ड गायन शैली में विशिष्ट स्थान रखनेवाली मधुर आवाजों को सुनने व समझने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के इस अध्याय में माण्ड गायकों का साक्षात्कार, कुछ प्रचलित माण्ड तथा राजस्थान के विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित हुए कार्यक्रमों की रिकार्डींग सी.डी. के माध्यम से प्रस्तुत हैं ।

माण्ड गायन शैली का पर्याय मानी जाने वाली राजस्थानकी स्वर-कोकिला स्व.अल्लाहजिलाई बाई से भेंट वार्ता के कुछ अंश राजस्थान लोक कलामण्डल, उदयपुर से श्रवण को प्राप्त हुए जिसके अन्तर्गत उनके बारे में जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । उनके द्वारा प्राप्त जानकारी को इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है ।

इस अध्याय के आरम्भ में माण्ड जगत से जुड़ी उन गायिकाओं का जो आज हमारे बीच नहीं हैं, जिनमें से स्व. अल्लाहजिलाई बाई (बीकानेर), स्व. ललिताबाई (किशनगढ़), स्व. गवरीदेवी (जोधपुर) का सारांश में जीवन विवरण सम्मिलित किया गया है, तद्उपरान्त वर्तमान में माण्ड गायन शैली के क्षेत्र में अद्भुत व ज्ञानवर्धक जानकारी रखनेवाले विभिन्न कलाकारों व गायक कलाकारों के साक्षात्कार का वर्णन हैं, वही साक्षात्कार यहाँ सी.डी. द्वारा प्रस्तुत है ।

इस अध्याय के अन्त में राजस्थान के विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित कार्यक्रम की रिकार्डींग को संलग्न किया गया है ।

अल्लाह जिलाईबाई :-

माण्ड गायकी के क्षेत्र में अल्लाहजिलाई बाई का नाम सर्वोपरि है, इनके द्वारा गाया "केसरिया बालम" देश ही नहीं विदेशों में भी आजतक याद किया जाता है, अपनी खनकदार आवाज से श्रोताओं को प्रभावित कर लेती थी, इनके द्वारा गाए गए गीतों में स्वरों का उतार-चढ़ाव, लय की ललक देखने योग्य होती थी । सुरों की मलिका अल्लाह जिलाई बाई को बचपन में ही महाराजा गंगासिंह के समक्ष गाने का अवसर प्राप्त हुआ तथा महाराजा गंगासिंह की ओर से छात्रवृत्ति प्रदान की गई, जो कि दो रुपय से आरम्भ होकर १५०/- तक पहुँची, किन्तु कठिन साधना व संगीत के प्रति गहरी रुची से बीकानेर दरबार व गुणीजन खाने में श्रेष्ठ गायिका के रुप में आपने अपनी जगह बनाई इनकें गुरु उस्ताद हुसैन बख्श थे। "आपने अच्छन महाराज, लच्छु महाराज, ऊ. अमीरखाँ, शमशुधीन खाँ एवं शिब्बू महाराज से माण्ड, दादरा, ठुमरी तथा नृत्य की बारीकियाँ सीखी।"[१] संगीत शिक्षा के दौरान आपको सप्ताह में एक दिन दरबार में अपनी कला कौशल दिखाने का अवसर मिलता था।

राजस्थान की स्वर कोकिला ने राजस्थानी लोक संगीत की विभिन्न परम्पराओं के गीत अपने कंठ से सजाए जिनमें राजस्थानी प्रेमाख्यान मूमल, रतन राणा, बाई सारा बीरा, कलाली आदि विभिन्न गीत समाहित है । देश के प्रमुख शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुकीं अल्लाह जिलाई बाई ने आज़ादी के बाद आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से अपना गायन संगीत रसिकों तक पहुँचाया तथा मई १९८७ ई. में लन्दन के अलबर्ट हॉल में अपनी गायिकी से देश ही नहीं विदेशों में भी विदेशी श्रोताओं के दिलों पर अमिट छाप छोड़ी ।

१ श्री शिवकुमार सोनी (आर.ए.एस.) पृ.सं. -१०६७

राजस्थान लोक कला मण्डल उदयपुर से प्राप्त भेंटवार्ता से कुछ जानकारी प्राप्त हुई !

"आपने अपनी प्रारम्भिक तालीम ७-८ वर्ष की आयु में आरम्भ की व सत्रह वर्ष की आयु में प्रथम बार सार्वजनिक कार्यक्रम दिया। आपके अनुसार माण्ड उपशास्त्रीय संगीत की विद्या है, और पारंपरिक गायन शैली है, प्रत्येक राग पर माण्ड है । माण्ड गाते हुए शास्त्रीय पक्ष में गाते है, तो ठेका बन्द नहीं होना चाहिए । माण्ड में सभी प्रसंगों की बन्दिशे उस्तादों द्वारा बनाई गई है । उदाहरणार्थ - यदि राजा शिकार पर जाते थे तो गाने बजानेवाले भी साथ जाते थे व महफिलें होती थीं । माण्ड की बन्दिशें राजस्थानी में होने पर भी सभी समझतें हैं, ये बन्दिशें, तिलवाडा, एकताल, चौताल, सभी तालों में होती है।"[1] शास्त्रीय आधार पर गांठ चौताला, झूमरा, अद्धा आदि कठिन तालों में लोकगीत गानेवाली ये गायिका ख्याल, गज़ल एवंम् ठुमरी आदि में भी पूर्ण अधिकार रखती थीं । संगीत के अथाह सागर में डूबकर गानेवाली अल्लाह जिलाई बाई के स्वरों की स्पष्टता, उतार-चढ़ाव, लय की ललक का विवरण शब्दों द्वारा स्पष्ट करना सम्भव ही नहीं है ।

२० मई १९८२ में राष्ट्रपति द्वारा आपको पदम्श्री से सम्मानित किया गया । १५ मई १९८२ को इन्हें "राजस्थानश्री" के सम्मान से नवाज़ा गया । लोक संगीत की इस कला साधिका को राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने १९७५ में, राजस्थान लोक कला मण्ड उदयपुर ने २७ फरवरी १९७८ ई. को तथा राजस्थान पर्यटन एवं कला व संस्कृति विभाग द्वारा २६ अक्टूबर १९८८ को सम्मानित किया गया ।

आपने अपना अन्तिम कार्यक्रम ३१ मार्च १९८९ में बीकानेर के टाऊन हॉल में दिया। माण्ड गायकी की पर्याय बनीं श्रीमती अल्लाह जिलाई बाई ९० वर्ष की आयु में ३ नवम्बर १९९२ ई. को सदा के लिए हमसे दूर हो गई । प्रस्तुत प्रबन्ध में इनकी सुमधुर आवाज में गाई गई माण्ड सी.डी. के माध्यम से सुनी जा सकती है ।

---

१ राजस्थान लोक कला मण्डल, उदयपुर - भेटवार्ता के कुछ अंश ।

श्रीमती ललिता बाई (किशनगढ़) :

श्रीमती ललिता बाई को माण्ड गायिका के रुप में जाना जाता है, आपकी संगीत शिक्षा आपके पिता श्री मदनसिंहजी से हुई जो कि दरबारी गायक थे उन्हें महाराज देवीलाल जी ने राजकीय खर्च पर संगीत प्रशिक्षण के लिए पं.विष्णु दिगम्बर जी के पास भेजा। प्रशिक्षण के पश्चात् आप राजदरबार में मुख्य गायक के पद पर नियुक्त थे। किन्तु नियती को कुछ ओर ही मंजूर था, आपके पिता का साया आपसे हमेशा के लिए दूर हो गया। पिता की आकस्मिक मृत्यु ने आपको पूरी तरह झंकझोर दिया किन्तु आपके नाना श्री मोडजी ने आपको संगीत सीखने को प्रोत्साहित किया। इनके नानाश्री रनिवास में संगीत नृत्य करनेवालीं कन्याओं को संगीतकी शिक्षा दिया करते थे, ललिता बाई ने इनसे ही संगीत शिक्षा ग्रहण की व अल्प समय में ही किशनगढ़ दरबार मे श्रेष्ठ गायिकाओं में गिनी जानें लगीं।

राजा सुमेरसिंह ने आपको दरबारी गायिका का खिताब देकर सम्मानित किया, आपने राजस्थान के कई क्षेत्रों जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, बीकानेर, आदि विभिन्न दरबारों में अपने गायन की प्रस्तुती कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

भारत की आजादी के बाद आकाशवाणी के माध्यम से आपने अनेक कार्यक्रम जनता के लिए दिए, संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कई बार आपने सभी संगीत प्रेमियों को मुग्ध किया, "मंसा के ठाकुर श्री रेवाचीदान जी बारहढ इनके द्वारा गाया गीत "मंसा रा उमराव म्हानें प्यारा लागौ सा" सुनकर इतने प्रभावित हुए कि तुरंत इनको स्वर्ण कंगन व अन्य आभूषण उपहार में दे दिए,"[१] आपने अपने जीवन के अनेक वर्ष संगीत साधना में व्यतीत किए तथा आपके द्वारा गाए गए गीतों को भुलाया नहीं जा सकता, आपका शरीर हमारे साथ नहीं है किन्तु आकाशवाणी व कई संगीत संस्थाओं द्वारा रिकार्ड की गई मधुर आवाज आज भी हमारे साथ है, व संगीत रसियों को मुग्ध करती रहेगी।

---

१ रंग योग, "राजस्थानी लोकगीत" श्री नारायणसिंह सांदू "त्रैमासिक पत्रिका" - पृ.सं.-२८.

स्व. श्रीमती गवरी देवी (जोधपुर) :

राजस्थान की इस सुप्रसिद्ध माण्ड गायिका का नाम आज भी बड़े आदर से लिया जाता है, बेशुमार पदक, प्रमाण पत्र, सम्मान पत्र आपको अपनी माण्ड गायकी के क्षेत्र में मिले। आपके पिता स्व. वंशीलाल जी बीकानेर के महाराजा श्री गंगासिंह जी के दरबारी गायक थे। संगीत का सफर आपनें अपने माता-पिता के सानिध्य में शुरु किया, २० वर्ष की आयु में आपका विवाह जोधपुर के श्री मोहनलाल के साथ हुआ और आप ग्रहस्थ जीवन में व्यस्त हो गई, किन्तु २५ वर्ष की आयु में ही श्री मोहनलाल जी का स्वर्गवास हो गया, इतनी सी आयु में विपत्तियों का सामना करना अत्यन्त ही कठिन था तभी ऐसी विषम परिस्थिती में इन्होंने संगीत को अपना सहारा बनाया। आपका सारा दर्द आपकी आवाज के ज़रिए सामने आया । अचानक हुए जीवन के इस मोड़ पर आप पुनः माता के पास आ गई, कुछ समय बाद जब आप जोधपुर आई तो राजा उम्मेदसिंह जी के सामने अपनी कला का परिचय दिया, तथा महाराजा उम्मेदसिंह जी इतने प्रभावित हुए की अपने दरबार में गुणीजन खाने में श्रेष्ठ गायिका के रुप सम्मानित किया । कुछ समय बाद आप रीवा आ गई और संगीत के कई कार्यक्रम दिए किन्तु यहाँ पर आपका मन नहीं लगा और आप पुनः जोधपुर आ गई । यहाँ से वे रावटी महाराजा के दरबार में गायन कार्यक्रम दिए, अनेक प्रकार के गीतों द्वारा सभी को अपनी कला का कायल किया, समय बीतता गया व आपकी प्रसिद्धि चारों तरफ फैलने लगी । बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, बूंदी राजघरानों में अपनी कला का प्रदर्शन किया ।

"स्वाधीनता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर दिल्ली व जयपुर में भी इनके कार्यक्रम हुए, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की ओर से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के अन्तर्गत अपने गायन कार्यक्रम उड़ीसा, कर्नाटक, तामलिनाडू, केरल, महाराष्ट्र, गोवा आदि कई जगह पर प्रस्तुत किए ।"[१]

१ रंगयोग - "राजस्थानी लोकगीत" श्री नारायणसिंह सांदू. पृ.सं.- २९ (त्रैमासिक पत्रिका)

आपके गीतों की विशेषता थी कि आप पूर्ण गीत धारा प्रवाह गाती थी । आपकी परिपक्व आवाज़ में कभी अल्हड़पन नहीं आया । आपकी लगन व कड़ी साधना के बल पर श्रोताओं के दिलों में अपना स्थान बनाया ।

गवरी देवी जी उन प्रतिष्ठित गायिकाओं में थी जिन्हें सैकडों गीत कंठस्थ थे । आपने माण्ड गायकी में महारत तो थी ही पर आप ठुमरी, भजन, गज़ल भी बखूबी प्रस्तुत करती थीं । आपने कई बार अल्लाह जिल्लाई बाई के साथ भी कार्यक्रम दिए ।

अपनी कला को प्रस्तुत करने के लिए उन्हें ज्यादा तामझाम की जरुरत नहीं होती थी। अर्थात् स्वयं ही हार्मोनियम बजाती थीं व साथ में एक ढोलक बजाने के लिए पुरुष/महिला कलाकार की ही आवश्यकता होती थी, आज की गायकी के समान उन्हें कभी ज्यादा वाद्यों की आवश्यकता महसूस नहीं होती थी । उनकी मधुर आवाज ही उनके लिए सभी कुछ थी ।

स्व.श्रीमती गवरी देवी को माण्ड गायन शैली में विभिन्न पुरस्कार दिए गए, "पूर्व राष्ट्रपति स्व.डॉ.राधाकृष्णन, स्व.डॉ.ज़ाकि़र हुसैन, ज्ञानी जैलसिंह, प्रधानमंत्री स्व.लाल बहादुर शास्त्री तथा स्व.श्रीमती इन्दिरा गांधी के कर कमलों से सम्मानित हुई । गवरी देवी को १९८६ में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी का सर्वोच्वय पुरस्कार तथा राष्ट्रपति व्यंकटरमण द्वारा ताम्रपत्र प्रदान किया गया । राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा कई बार सम्मानित किया गया ।"[1] भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात सार्वजनिक कार्यक्रम देने शुरु किए, तथा आकाशवाणी केन्द्र से "माण्ड" गायकी में अनेक प्रस्तुती दीं । फिर एक दिन शोहरत की बुलन्दी को छू ने वाली ये मृदुभाषी कलाकारा अपने नश्वर शरीर को त्याग कर (२१ जून १९८८) को ब्रह्मलोक में विलीन हो गई ।

ये हमारा सौभाग्य है कि आपके अनेक गीत आकाशवाणी व कई संस्थाओं में आज भी उपलब्ध है ।

---

१ रंगयोग "राजस्थानी लोक संगीत" श्री जफखान सिन्धी, पृ.सं.-१०.

*****

## वर्तमान में माण्ड गायन शैली के क्षेत्र में दखल रखने वाले विभिन्न कलाकारों, गुणजिनों के विचार (साक्षात्कार):-

1. **माँगी बाई आर्या (उदयपुर) :**

माण्ड गायिकाओं में श्रीमती माँगीबाई आर्या का नाम सर्वप्रचलित है । इनका जन्म प्रतापगढ़ (राजस्थान) में हुआ तथा आपके पिता श्री कमलराम उच्चकोटि के गायक हुए तथा आपने अपनी संगीत शिक्षा अपने पिता से ग्रहण की।

आपका विवाह सादड़ी के गायक श्रीरामनारायण जी के साथ सम्पन्न हुआ, पिता के घर से ससुराल तक आपको संगीत का सुरीला वातावरण प्राप्त हुआ। यही कारण रहा कि आप अपने भावविभोर लोकसुरों से सभी को मुग्ध कर देती हैं, कई वर्षो से आप उदयपुर में रहने लगी हैं, आपने शास्त्रीय संगीत में प्रयाग संगीत समिति इलाहबाद से सीनियर डिप्लोमा उत्तीर्ण किया है । आप राजस्थान पर्यटन विभाग, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी तथा विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा आयोजित संगीत समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी हैं । आप आकाशवाणी में भी हाई ग्रेड कलाकारा हैं ।

आपके अनुसार माण्ड गायकी बहुत पुरानी है - शास्त्रीय संगीत से जुड़ा हुआ लोक संगीत है । ढलती हुई उम्र के पड़ाव पर भी आप संगीत प्रति जाग्रत हैं और विभिन्न छात्र-छात्राओं को संगीत प्रशिक्षण दे रही हैं ।

2. **स्व. रामलाल जी (जयपुर) :**

स्व. रामलाल माथुर जी के अनुसार माण्ड ना तो सिर्फ राग है, ना ही सिर्फ लोक संगीत है । यह एक प्रकार की गायन शैली है । माण्ड दोनों प्रकार की होती है - निबद्ध व अनिबद्ध । माण्ड के मुख्यतः चार प्रकार ही होते हैं । शुद्ध, आसा, सूब, सामेरी। मुख्य रुप से माण्ड जैसलमेर व बाड़मेर मे गाई जाती है, तथा ढोली, मिरासी, आदि जातियाँ माण्ड गायन में निपुण होती है ।

3. <u>श्री चिरंजीलाल जी (जयपुर)</u> :

माण्ड एक गायन शैली है । माण्ड में परिवर्तन करना कठिन होता है। ज्यादातर माण्ड खमाज ठाठ में मिलती है । हम माण्ड को ठुमरी के समान मान सकते हैं । जिस प्रकार ठुमरी गाई जाती हैं उसी प्रकार से माण्ड है, राज्य में रजवाड़ो में गाई जाती थी, व राजा-महाराजा की चीज़ है । आम जनता के बसकी बात नहीं हैं । वर्तमान में सभी सुनते है। उस समय समयानुसार गाई जाती थी, शास्त्रीय पक्ष को महत्व दिया जाता था।

4. <u>जमीला बाई (जोधपुर)</u> :

राजस्थान में वर्तमान माण्ड कलाकारों में श्रीमती जमीला बाई विशेष स्थान रखती है । आपके गायन की प्रारम्भिक शिक्षा आपकी माँ श्रीमती हजारा बाई तथा पिता मोहम्मद खाँ जी से हुई । आपने १५ वर्ष की आयु से ही गाना आरम्भ किया। प्रारम्भ में राजा-महाराजाओं के दरबार में कई कार्यक्रम दिए, भारत स्वतन्त्र होने के बाद आपने राजस्थान पर्यटन विभाग संगीत नाटक अकादमी में अपनी प्रस्तुती की ।

जमीला बाई एवम कुलसुम बाई

5. <u>कुलसुम बाई</u> :

आप जमीलाबाई जी की ननद है। आप भी उनके साथ-साथ माण्ड गायन में पारंगत हैं तथा अपनी भाभी के साथ अपनी प्रस्तुति देती है । वर्तमान में आप दोनों एक साथ ही प्रस्तुति देती हैं। आप दोनों नें राजस्थान के विभिन्न नगरों में जैसे कोटा, बूंदी, जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा भारत में दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, शिमला में अपने सुरों से रसिकों को सरोबार किया है । आपने देश ही नहीं विदेशों में अमेरिका, लंदन व गयाना आदि में भी अपनी कला की प्रस्तुति दी है तथा राजस्थान की ही नहीं भारत की इस गायन शैली की पताका को लहरा रही हैं।

6. <u>सरस्वती धांधड़ा जी</u> :-(**साक्षात्कार**)

राजस्थान के किशनगढ़ में जन्मी ये माण्ड गायिका माण्ड के प्रति समर्पित हैं । इन्होंने अपनी माता श्रीमती विरज बाई जी से व मौसी श्रीमती ललिता बाई जी (सुप्रसिद्ध माण्ड गायिका) से संगीत की शिक्षा ग्रहण की ।

कंठ संगीत में भातखण्डे संगीत विद्यालय लखनऊ से "मध्यमा" की परीक्षा १९८४-८५ में उत्तीर्ण की । आपका विवाह उदयपुर के श्री हरीलाल धाँधड़ा जी से हुआ जो स्वयं अच्छे संगीत कलाकार हैं ।

कुछ समय आपने मीरा कला मन्दिर तथा राजस्थान विद्यापीठ में पार्श्वगायिका के पद पर कार्य किया । आपने राजस्थानी फिल्म "बाई चाली सासरियें" में सर्वाधिक लोकप्रिय गीत "बन्ना रे बाँगा में झूला घाल्या" में अपनी सुमधुर आवाज़ दी । आपकी गाई ऑडियो कैसेटस्, सी.डी., आदि रिकार्ड वर्तमान में हमें सुनने मिलतें हैं । वर्तमान में आप देश ही नहीं विदेशों में भी माण्ड को अवगत कराने का सफल प्रयास कर रही हैं।

प्र.१ माण्ड से तात्पर्य क्या है ?

→ इनके अनुसार माण्ड शास्त्रीय गायकी का एक पहलू है जो कि राजा-महाराजाओं को सुनाने के लिए गाई जाती थी, किन्तु वर्तमान में आम जनता की बात हो गई है।

प्र.२ किन-किन रागों का प्रभाव माण्ड पर ज्यादा है ?

→ मुख्य रुप से माण्ड देश व सौरठ राग में होती है, किन्तु वर्तमान में प्रस्तुतिकरण को खूबसूरत बनाने के लिए गायक कलाकार भिन्न-भिन्न रागों के स्वरों का प्रयोग करते हैं । यह एक प्रयास मात्र है वास्तविक माण्ड सिर्फ देश व सोरठ में ही गाई जाती हैं ।

प्र.३ माण्ड कितने प्रकार की होती है ?

→ माण्ड एक ही है, गाने का तरीका अलग है – जैसे उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि।

प्र.४ वर्तमान में क्या स्थिति है ?

→ वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव अधिक होने के कारण माण्ड गायिकी भी प्रभावी हुई है । किन्तु इनके अनुसार पुनः शास्त्रीय संगीत का समय आयेगा व माण्ड गायकी भी प्रभावी होगी ।

वर्तमान में इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता है । इनके अनुसार माण्ड गायकी में सारंगी वाद्य का प्रयोग किया जाता है । सौ रंगो में रंगी सारंगी वाद्य को आधार स्वर मानकर गायन किया जाता हैं । इनकी गायिकी में शास्त्रीयता का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है । ये माण्ड गायन शैली को उपशास्त्रीय ठुमरी शैली के समान मानती हैं । इनके अनुसार जिस प्रकार ठुमरी, कलाकार के कौशल पर निर्भर करती है, उसी प्रकार माण्ड गायकी भी कलाकार की कौशलता पर निर्भर करती है ।

*****

**7.** बन्नो बेगम नियाज़ी : ( साक्षात्कार )

बन्नो बेगम नियाज़ी

जयपुर राज घराने से जुड़ी माण्ड गायिका बन्नो बेग़म नियाज़ी जी ने माण्ड गायन शैली को अपने सुमधुर स्वरों से बाँध रखा है । इनकी माता श्री जौहर बाई जयपुर राज-दरबार की प्रसिद्ध माण्ड गायिका एवं नृत्यांगना रही है । माँ से ही आपको संगीत विरासत में प्राप्त हुआ । आपका जन्म १९२८ में सीकर जिले के दाता गाँव में हुआ । आप अपनी माँ के साथ जयपुर महाराजा के गुणीजन खाने में रहती थी। संगीत के इसी परिवेश ने बन्नो जी का दिल मोह लिया तथा आपने दस वर्ष की बाल्यावस्था से संगीत की शिक्षा लेना आरम्भ किया, आपके गुरु उ.नासीस खाँ साहब थे ।

आप माण्ड गायिका ही नहीं अपितु लोकगीत, भजन, गज़ल, ठुमरी, दादरा आदि गायन में भी निपुण है । आपने जयपुर नरेश मानसिंह के दरबार के अतिरिक्त कोटा, बूंदी, बीकानेर, उदयपुर, आदि विभिन्न रजवाड़ी महफिलों में अपने मधुर स्वरों की फुहारों से सरोबार किया । आप दरबारी परम्परा की माण्ड गायकी में विशेष दक्षता रखती हैं ।

आपसे बात करने का शुभ अवसर जब मुझे प्राप्त हुआ तो आप अपने अतीत की यादों का ज़िक्र करते हुए बताती हैं कि उस समय (दरबार) का अलग ही एहसास था, रियाज़ पर विशेष ध्यान दिया जाता था तथा दरबार में प्रस्तुती करने से पहले, वेशभूषा, आभूषण द्वारा शाही माहौल से भलि भांती परिचित होना होता था ।

राज दरबार में गायकों, कलाकारों को सम्मान की दृष्टि से देखते थे । उनके अनुसार राज दरबार में समयानुसार गीतों का शास्त्रीयबद्ध होने के कारण उनका स्तर में चढ़ाव था।

प्र.१ माण्ड किस प्रकार की गायन शैली है ?

→ आपके अनुसार "माण्ड" का सम्बन्ध शास्त्रीय संगीत से है । यह गायकी शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित है । यह गायकी राजदरबारों में पनपी, परम्परागत गायकी है।

प्र.२ वर्तमान में क्या स्थिति है ?

→ माण्ड शैली में पहले जैसी बात नहीं इसके स्तर में अब गिरावट आ रही हैं ।

*****

8. **श्री चन्द्रगन्धर्वजी – (साक्षात्कार )**

शोध के कार्य की अवधि में मुझे उदयपुर के श्री चन्द्रगन्धर्व जी से सम्पर्क करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अपने ज्ञान के भण्डार में से आपने मुझे माण्ड के बारे में जानकारी दी इस साक्षात्कार को मैं उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रही हूँ ।

"मैं चन्द्र गन्धर्व मेवाड़ी, उदयपुर राजघराने का मेवाड़ का रहने वाला हूँ । माण्ड के प्रति मेरी भी बहुत बड़ी आस्था है । माण्ड एक ऐसी विशिष्ट गायन शैली है जो अपनी पहचान अलग से बनाए हुए है ।

प्र.१ माण्ड की व्युत्पत्ति कहाँ, कैसे, कब हुई ?

→ इसका जवाब एक साथ सुनिश्चित रुप में कुछ भी नहीं दिया जा सकता, माण्ड राजस्थान के सामन्त परिवेश में पनपा हुआ एक ऐसा संगीत है जो अपने आप में निराला, अनूठा और बेजोड़ है ।

प्र.२ माण्ड कितने प्रकार की होती है ?

→ माण्ड का आकार-प्रकार ढूंढना आसान नहीं, जितने लोग माण्ड को अपने-अपने प्रकार से गाते है वो सभी सही भी हैं और गलत भी। माण्ड नाम से मारवाड में एक प्रदेश भी है । ये भी सही है कि राजस्थान को, जिसको रसहीन कहते हैं वहीं संगीत के साहित्य का ऐसा उद्भव हुआ जो निश्चित रुप से आश्चर्यजनक है । वातावरण में रंगहीन होने के कारण वहाँ के लोगों ने अपने जीवन में रंगीनी घोल दी है - मेहन्दी में, कपडों में, जेवरों में रंग रुप दिया है, जिससे उनको आभाव प्रतीत नहीं होता, तो "माण्ड" एक राज गायकी है राज गायकी माण्ड का एक शिरोमणी स्वरुप है" ।

माण्ड एक ओर जहाँ शास्त्रीय संगीत से ओतप्रोत है वहीं दूसरी और लोक संगीत से भी भरी-पूरी है इस शाश्वत सत्य को स्वीकार करके ही हम माण्ड को कोई आकार दे सकते हैं, सही बात तो ये है कि माण्ड एक गड़ गायकी के रुप में एक दरबारी गायकी के रुप में विकसित हुई, पल्लवित हुई, सामन्ती युग में जहाँ चारों

तरफ संगीतमय वातावरण बना रहता था, उस समय कुछ जातियां विशेष थीं, जो विशेष प्रकार के गीत बनाती थीं और अपने यजमानों व अपने आश्रयदाताओं को रिझाती थीं ।

"मैंने अपने बचपन में जब सामन्ती युग था स्वतन्त्रता से पहले गाँव गाँव, घर-घर, ठिकाने-ठिकाने में जब जागिरदारों का वर्चस्व व प्रभुत्व था और अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार वहाँ कलाकार गायक कई तरह के कलावन्त, गायक, गणिकाएँ, उस्ताद रहते थे और वे वक्त-वक्त के अनुसार गाते-बजाते थे"।

माण्ड राग विशेष नही है यह एक गायकी है जैसे वृज की होरी, बनारस की होरी, बनारस की कज़री व और ऐसी लोकधुनों यद्यपि उन लोक धुनों का कोई आधार नहीं है, जबकि माण्ड एक आधार भूत वस्तु है ।

"माण्ड जैसी मैने सुनी है अपने बचपन में जब राजा महाराजाओं के विवाह शादी होती थी तब राग-रंग निरन्तर रुप से चलता रहता था और तब सुबह से शाम तक व अर्ध रात्री से सुबह तक विभिन्न प्रकार के गीत, जिन्हें हम बन्दिश कह सकते हैं गाई जाती थी और वह हर प्रकार से अपने स्वर बदल के पुरानी प्रथा के अनुसार या राग रागिनियों के समय निर्धारण के अनुसार गाई-बजाई जाती थी । मैनें जोगिया माण्ड, कांलिगंड़ा माण्ड, भैरव माण्ड, आसावरी माण्ड आदि इत्यादि प्रातःकालीन बाद में देश माण्ड, सोरठ माण्ड, सुनी हैं, माण्ड की विशेषता यह है कि माण्ड में जहाँ स्वरों का व संगीत का बाहुल्य रहता था वहीं समयानुसार या प्रकृतिनुसार उसमें लोक साहित्य भी भरा-पूरा है । माण्ड गूँगी नहीं होती माण्ड बोलती हुई होती है समयानुसार साहित्य का समावेश पूरी तरह रहता है ।

माण्ड एक ऐसी गायकी है जिसे जहाँ शूर वीरो ने युद्ध काल में भी इसको अभिव्यक्ति दी है - वे जो गाते थे उनको जांगड़ कहा जाता था । और वे जांगड़ लोग अपने यज़मानों को अपने वीरवरों को उत्साहित करने के लिए उनके पूर्वजों की गाथाएँ धुन में सुनाते थे ।

इस तरह इसके बाद सामन्ती युग आया । रीतिकालीन युग में कई ऐसी जातियां इसमें शरीक हुई कि इन्होंने अपने मतलब कि चीजें इसमें भर दी और यह गायी गई । माण्ड एक ऐसा स्वरुप है जिसे किसी एक खाने में, एक चौकटे में धरना, और उसका मूल्यांकन करना बहुत कठीन है ।

माण्ड गायकी खुले गले का काम है । माण्ड गाने के लिए गले पर आवाज पर पूरा कंन्ट्रोल चाहिए । माण्ड को एक नरम गज़ल-गायकी या ठुमरी गायकी की तरह नहीं लिया जा सकता, माण्ड एक बाहदुरी की गायकी है एक जोरदार गायकी है। माण्ड राजस्थान में पनपी हुई, राजस्थान के रजवाड़ों में पनपी हुई एक ऐसी गायन शैली है जो अपने बहुविद् रंगों में समाई हुई अपनी अलग छटाएँ बिखेरती हुई जन सामान्य को मोहित करती है, मोहित करती रहेगी ।

प्र.३ माण्ड के काव्य में क्या क्षेत्रीय प्रभाव दिखाई देता है, उदयपुरकी माण्ड क्या विशेषताएँ लिए हुए है ?

→ माण्ड की सीमा रेखा कोई बांधी नहीं जा सकती, भारतीय संगीत सात स्वरों में उन सात स्वरों से अलग ना तो बीकानेर है, ना जयपुर है ना जोधपुर है । भौगोलिक स्थिती के अनुसार कुछ भाषा में लोक संगीत में ढोला-मारु का दोहा, राजस्थान के पुराने लोक काव्य है, मूमल आदि ऐसे लोक काव्य है जिनको ढाढ़ी-मिरासी, मांगणियार ये विशेष जातियाँ अपने ढंग से गाती रहीं है । लोक साहित्य तो माण्ड का आधार है माण्ड में अनेक प्रकार की लोक गाथाएँ गाई जाती थी ।

प्र.४ माण्ड गायन शैली की वर्तमान स्थिति क्या है ?

→ माण्ड का जो शास्वत स्वरुप है वह सदैव रहेगा, माण्ड एक सनातन वस्तु है जो बहुत प्राचीन काल से मै अनन्त या आदिकाल तो नही कहता लेकिन विगत हजार

वर्षो से तो मै कह सकता हूँ "माण्ड राजस्थानी लोक संगीत में अब तो भारतीय संगीत में भी क्योंकि बड़े-बड़े गवैये माण्ड गाने लगे हैं । माण्ड को एक गायकी के रुप में एक राग विशेष के रुप में स्वीकार किया गया है और माण्ड खमाज, माण्ड पीलू, जो भी कोई कुछ भी गा सकता है, कोई कुछ भी गाकर कहे कि ये मै माण्ड गा रहा हूँ तो उसे भी आपको स्वीकार करना पड़ेगा।

प्र.५ माण्ड गायन शैली में विभिन्न रागों का प्रयोग करना क्या उचित है ? मुख्यतः किन तालों का प्रयोग इस गायन शैली में किया जाता है ?

→ क्योंकि हमारे पास कोई मापदण्ड नहीं है ना कोई सीमा रेखा है, इस लिए हमें स्वीकार करना पड़ेगा। माण्ड कई रागों में कई तालों में गाई जाती थी, माण्ड गायकी के ठेके भी अलग होते थे, अब वो सारी माण्ड कहरवे में आकर सिमट गई है, कोई भी गायक कहरवे का ठेका शुरु करके माण्ड गाता है तो माण्ड की गंभीरता व सरसता को वो ठहराव व आराम नहीं मिलता है ।

माण्ड बड़ी शीलवन्ती गायकी है जो अपनी परम्पराओं को समाये हुए है"।

*****

## 9. जसकरण गोस्वामीजी - (साक्षात्कार)

बीकानेर के श्री जसकरण गोस्वामी जी सितारवादक हैं । आपने अली अकबर खाँ से सितार सीखा तथा आप अत्यन्त ही गुणी व कला पारखी है आपके अनुसार माण्ड - "आपके ही शब्दों में" –

प्र.१ माण्ड गायकी से क्या तात्पर्य है ?

→ माण्ड गायकी राजस्थान की एक विशिष्ट शैली है, वैसे माण्ड के अर्थों में जो सब से पहला अर्थ है वो है माण्डना या मण्डान या चित्रण जिसे कहते हैं या कोई चित्र बनाया जाए तो उसे राजस्थानी में माण्डना कहते हैं व माण्ड जो है वो एक संज्ञा बन जाती है । एक ऐसा चित्र प्रस्तुत किया जाए जिसको सांगेतिक चित्र कह सकते हैं उसमें यह आवश्यक है कोई शब्दावली हो कविता का सहारा हो, तो राजस्थान के माण्ड में मुख्यतः ऐसा है कि राजस्थानी काव्य, जो कि भक्ति परक भी हो सकता है व श्रृंगार रस का व वीर रस का भी हो सकता है, ऐसा काव्य जिसको गाया जाए वो माण्ड है ।

यह परम्परा साहित्य का आदि गाथा काल है, वीर गाथा काल जिसको कह सकते हैं जिसमें पृथ्वी राज रासो आदि महाकाव्य लिखे गए हैं या सूर्यमल्ल मिश्रण का काल है, माण्ड गायन शैली भी वहीं से निकली । संगीत में जो गौड़ा, भिन्ना बेसरी आदि जो जातियाँ हैं इसमें भिन्ना जाति का जो संगीत है, उस में से माण्ड की उत्पत्ति हुई है ।

राजस्थान में क्योंकी यहाँ के प्रांत में चार तरह कि बोलियां प्रचलित हैं मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी व बागड़ी तो इन चार तरह कि शैलियों के माण्ड चार अलग-अलग हैं ।

प्र. २ माण्ड गायन शैली का गाना किस प्रकार किया जाता है ?

→ ये एक शैली है, एक प्रबन्ध शैली । जिसको हम कहते हैं इसमें पूरा आख्यान है, इसमें दोहा नहीं है, जैसे लाखा है रिड़मल है, इसमें पूरी गाथा है । और दोहा शैली में जो गाने है, उसमें रोक करके दोहा कहा जाता है । कहीं-कहीं उसमें ताल को रोक देते हैं और कहीं-कहीं ताल चलती भी रहती है, दोहा मुक्त रुप में बोला जाता है।

स्वरुप वो ही है इसमें पूरा आख्यान गाया जाता हैं जैसे गोगा जी का ब्यावला है, लाखा है, कब पैदा हुआ कब क्या हुआ, पैदा होने पर क्या उसके उत्सव हुए पूरी कहानी जैसी चलती जाती है, पूरा कथा गान है, व्याख्यान ज्यादा गाया जाता था उसी प्रकार जैसे केसरिया बालम है जिसमें उनके आने पर स्वागत कैसे किया जायेगा ।

प्र.३ वर्तमान मे माण्ड गायन शैली की क्या स्थिति है ?

→ माण्ड गायकी का पुराना काव्य व अभी के काव्य में गिरावट आ रही है, पुराना काव्य में साहित्य गरिमा है जैसे साजन् आया हे सखी कॉंई मनवार करॉं, थाल भरॉं गज मोतियां ऊपर नैन घरां - यानी की अपने प्रियतम को भेंट देने के लिए गजमोतियों का थाल भरा है लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण चीज़ है कि आँखें उसके सामने रख दें, जिसकी कीमत मोतियों से लाखों गुणा अधिक है तो इस प्रकार जो भावपूर्ण काव्य जो है "कागा सब तन खाईयो चुन-चुन खाईयो मांस, दो नैना मत खाईयो, पिया मिलन की आस" तो ऐसा काव्य था जो अब खत्म हो रहा है ।

प्र.४ माण्ड गायन शैली में किस-किस राग के स्वर अधिक प्रयोग में लेते हैं ?

→ माण्ड गायकी का तो ऐसा है कि कोई सुनकर नहीं गा सकता सीख के ही गाया जा सकता है, इसमें दो बातें है एक माण्ड गायन शैली है और एक माण्ड राग है । माण्ड राग कम ज्यादा राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिमी क्षेत्र पर प्रचलित है,

महाराष्ट्र का माण्ड अलग है, गुजरात का, राजस्थान का अलग, इनको मूल एक ही है ये बिलावट थाट के है । दो स्वरुप मे देखते है एक दुर्गा अंग से सा रे म प ध सां व दूसरा सा ग म प नी सां देश अंग से ।

तो माण्ड गाते वक्त जो गंधार को छोड़ते है तो ऋषभ प्रधान रहता है, व धैवत को छोड़ते हैं तो निषाद को प्रधान करना पड़ता है । यह कलाकार की रचनात्मक प्रवृत्ति भी होती है तो तरह तरह के रागों को मिलाकर माण्ड बनाये जैसे आसा, सूब, सामेरी, देश माण्ड आदि ।

प्र.५ क्या "माण्ड" लोक शैली है ?

→ माण्ड गायकी है, जिस प्रकार ठुमरी को लोक गायन नहीं कह सकते सुन कर नहीं आ सकती, सीखना पड़ेगा इसी प्रकार माण्ड गायकी भी ऐसी है सीखना पड़ेगा, लोक गायन तो ऐसा होता है आपसे मैंने सुना, किसी ओर से सुना वो गाना सीख लिया लेकिन माण्ड को सुनकर नहीं सीखा जाता है ।

"माण्ड का जन्मस्थान जयपुर है, जयपुर के दरबार में गुणीजन खाना था, उसमें १५०-२०० गवई, साजिंदे रहते थे, वीणा वादक, जिसमें बड़े मोहम्मद खां, बेहराम खां, बड़े रजब़ अली खां, आदि उन्हें ऊंची-ऊंची तनखाँ मिलती थी । यहाँ खान बख्श व जहीर बख्श दो भाई हुए है इन्होंने माण्ड ईजाद किया । राजस्थानी भाषा में काव्य हो जो काव्य भी अपना प्रभाव डाले और संगीत भी । ताकि जो संगीत के प्रभाव से बड़े गवई हैं उस स्थिती में भी उनके सामने रंग जमा सके । आप देखते है कि शास्त्रीय संगीत में काव्य की प्रधानता नहीं है तो माण्ड एक ऐसी है जिसमें शास्त्रीय, के साथ-साथ काव्य की भी प्रधानता रहती है तो इस कारण से वो अपना स्थान बना सके व उनका स्थान कुछ ऐसा बना नई गायकी जन्म लेली । माण्ड का साहित्य भी उतना असर करता है । जयपुर ही सबसे बड़ी रियासत थी सभी ने अनुसरण किया व माण्ड गायक कहलाने लगे"।

*****

## 10. संतोषकुमारजी - (साक्षत्कार)

ALL INDIA RADIO बीकानेर Programme Executive श्री संतोष कुमार नाहर जी मिश्रा घराने से है, आप बताते है कि आप तानसेन के वंशजों में से है - ग्वालियर महाराज से आपके परदादाजी को "नाहर" की उपाधि प्राप्त हुई ।

प्र.१ माण्ड गायकी से क्या तात्पर्य है ?

→ आपके अनुसार माण्ड "माण्ड एक राग है, माण्ड की एक ऐसी धारा है जो शास्त्रीय संगीत से जुड़े हुए लोग है वे उसे माण्ड राग की श्रेणी में रखते हैं व जो ग्रामीण परिवेश जो लोक जीवन से जुड़ा है उसे शास्त्रीय पक्ष की जानकारी नहीं है पर वो अपने ढंग से गाते है, क्योंकि जिस तरह शास्त्रीय कलाकार स्वरों में गमक मीड़ बोल-बनाव माण्ड राग यानी ठुमरी से ढंग से गाते है, तब हम उसमें बोल-बनाव व दोहे व अच्छे साहित्य का प्रयोग करते है पर ग्रामीण शैली वाले अपने अनुसार शब्दों को तोड़ मरोड़ कर उनकी गायन की शैली नियमों से नहीं बंधा पर उनका अंदाज लोक जीवन से जुड़ा है । पर ये विवाद का विषय है कि माण्ड राग है या माण्ड गायन शैली है । पर ये लोक जीवन से ज्यादा जुड़ा रहा व प्रदेश का अपना अलग पहचान है । "मैं शास्त्रीय संगीत से जुड़ा हूँ इस कारण माण्ड को एक राग की दृष्टि से ही देखता हूँ" । माण्ड दोनों धाराओं से जुड़ी हुई चीज़ है । चूंकी हम शास्त्रीय नजरिए से देखे तो माण्ड राग कहते है अगर लोक जीवन की दृष्टि से देखें तो माण्ड लोक शैली है ।

प्र.२ माण्ड कितने प्रकार की होती है ?

→ माण्ड के कई प्रकार हैं, क्षेत्रीयता के आधार पर माण्ड अलग-अलग है, भाषा व गाने का लहज़ा अलग-अलग होता है, माण्ड राग यानी पश्चिमी । अगर पश्चिमी में दो विभाग हो जाते हैं, अगर हम थोड़ा सा पाकिस्तान बोर्डर की तरफ जाते है तो उधर पंजाब, सिन्ध प्रान्त आते हैं वहाँ भी माण्ड गाये जाते हैं पर वहाँ थोड़ा सा उर्दू का

प्रभाव उसमें आ जाता है थोड़ा सा भैरवी का पुट उसमें आ जाता है पर हम इधर का माण्ड लेते हैं तो गुजरात बगरह । गुजरात का जो गरबा है उसमें भी वो ही स्वर लगते हैं जो माण्ड में लगते हैं, पर दोनों रिदम के कारण अलग होते हैं । हर स्टेट का अपना रिदम हैं जिस तरह महाराष्ट्र का एक रिदम चलता है उसी तरह गुजरात के गरबा का एक और यहाँ का यानी इधर का माण्ड कई प्रकार में हैं जैसलमेर माण्ड अलग बीकानेरी अलग जयपुर का अलग तो उदयपुर का अलग। राजस्थान में हर ५०/१०० किमी. पर भाषा और बोल चाल का लहजा बदलता है उस हिसाब से माण्ड भी बदला।

प्र.३ बीकानेरी माण्ड में किसका प्रभाव अधिक है ?

→ बीकानेरी माण्ड कि बात करें तो यहाँ शास्त्रीय प्रभाव अधिक है । माण्ड को अब तो उपशास्त्रीय संगीत का एक अंग मान लिया गया है यानी किसी भी कलाकार अपने मुख्य प्रदर्शन के बाद कजरी है चैती है, माण्ड है, इसका ये प्रदर्शन करते हैं।

प्र.४ आसा माण्ड, सूब माण्ड व सामेरी माण्ड से क्या तात्पर्य है ?

→ "चूंकी इस समय ऐसे बहुत से राग बन रहें है, दो रागों का मिश्रण करके । माण्ड बिलावट थाट का राग है और सातों स्वरों का प्रयोग होता है, इसमें हम कहीं-कहीं खमाज के ढंग से भी आ जाते हैं । सा ग म प ध नी सां, निरें सांनि धप धनी धप धग मप गरे सारे मम पध नीध पप, हम ये लगाते हें, ग म प ध नी सां, सां निसां धनी प ध ग म ग और हम इसमें रागों का मिश्रण कर लें, बिलावट थाट में बिहाग है हम बिहाग्ड़ा माण्ड गा सकते हैं हम बिहाग माण्ड का भी निर्माण कर सकते हैं । ये कलाकारों की अपनी रचनात्मक शैली या उनकी कला कौशल के आधार पर ये मिश्रण करते है । माण्ड का स्वर समूह लिया + उसमें बिहाग । जैसे - सा ग म प ध, सा ग मे पनी साग रें निध पग नम प ध गमग नीसां धपऽ, गमग, सा रे म म प

ध नी पधप गऽ मऽ पऽ धऽ ये बिहाग्ड़ा का खास अंग है पर जो शुद्ध माण्ड है वो बिलावल थाट से है, उसमें कहीं-कहीं खमाज का मिश्रण भी कर लेते हैं।

प्र.५ माण्ड गायन शैली कबसे चली आ रही है ?

→ माण्ड गायन शैली पारम्परिक है रजवाड़ों के पूर्व भी था पर कलाकारों को आश्रय रजवाड़ों से मिला । माण्ड दरबार में भी गाया जाता था और माण्ड दरबार से हट कर ग्रामीण जनता में भी । ग्रामीण दिन भर के थक के रात में आकर बैठते थे यानी थकान उतारने का या अपने का तरोताजा करने का संगीत से बढ़कर कोई साधन नहीं है, व महाराज के दरबार में हर लोगों को जाने कि आज्ञा नहीं होती थी, उनसे जुड़े हुए लोग या उस दरबार से जुड़े हुए लोग, या उस कला को समझने वाले लोग, यानी कला के प्रदर्शन उच्च कोटि का था और उसको प्रदर्शन करने वाले व समझने वाले का जो श्रेणी थी वो ग्रामीण माण्ड से बहुत उच्च था, उच्च स्तरीय था, इसलिए वहाँ का माण्ड अलग कहा है । ग्रामिण परिवेश का माण्ड है, किसी एक व्यक्ति ने आलाप लिया क्योंकि वहाँ समूह स्वर में लोग २५/३० चौपाल में बैठकर लोग संगीत का आनन्द लेके अपनी थकान मिटाते थे, यानी रात का आने वाले कल की योजना भी बनाते थे, साथ-साथ संगीत से अपनी थकान भी मिटाते थे, वो माण्ड का प्रकार अलग हो गया, एक व्यक्ति ने माण्ड का आलाप दूसरे ढंग से लिया, एक कुछ नहीं गाता है, एक समूह को गाते देखकर उसमें भी गाने का प्रयास तो वो माण्ड का धीरे धीरे रुप बदला। भारतीय संगीत में १० थाट है व माण्ड को राग के रुप में मान्यता नहीं है।

आजतक किसी भी किताब में नहीं देखा होगा अगर हम ख्याल राग के हिसाब से बात करें तो इसको उपशास्त्रीय संगीत के दर्जे में माना गया है ।

प्र.६ सामान्तीय काल में व वर्तमान काल में माण्ड गायन करते समय लय का प्रयोग किस प्रकार होता है ?

→ रिदम के साथ माण्ड शुरु हुआ, उसके बाद जब दोहे का समय आता था तो रिदम रोक दिया जाता था, बाद में आज के दौर में भी रिदम (लय) चलता रहता है, उसमें दोहा कह देते हैं ये कलाकार की कला कौशलता पर है, कि दोहे को उसमें लयात्मक ढंग से प्रस्तुत कर देते है, पर पहले जो तबला रोक के गायन किया जाता था उसमें अलग ही भाव प्रकट होते थे, पहले विलम्बित गायन, लय रोक के स्थाईत्व देते हुए गाते थे । आज माण्ड को चार मिनिट में ही गाना है अर्थात समय सीमा में बद्ध होने से माण्ड का स्वरुप बदल गया है ।

*****

## 11. सुश्री सुधा राजहंस जी – (साक्षात्कार)

आप संगीत नाटक अकादमी में निर्देशक के पद से निवृत्त हुई तथा आपने अपनी पुस्तक में माण्ड के चार प्रकारों को विभक्त किया है । "आपके अनुसार माण्ड आपके ही शब्दों में" :-

प्र.१ माण्ड गायन शैली क्या है ?

→ माण्ड सभी क्षेत्रों में गाई जा रही हैं और किनके द्वारा गाई जा रही है । मुख्यतः पेशेवर गायको द्वारा, क्योंकि वो एक बंदिश के रुप में लोक रागों को प्रस्तुत करते हैं। समाज में एक विशिष्ट समुदाय को प्रस्तुत कर रहें है और उनकी अपनी एक विशिष्ट गायन शैली है जिसमें वो रागदारी वाली बात करते हैं । अगर शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि कि बात करें तो पूरे १२ स्वर का उपयोग करके वो गाते हैं, ऐसे लोग कौन है ? ऐसे लोग वो हें जिनकी आजीविका संगीत है, जिनका जीविकोपार्जन संगीत है, जिनको हम पेशेवर संगीतज्ञ कहते हैं, तथा राजस्थान के समाज में इस तरह की जातियों का एक विशिष्ट स्थान रहा है । समाज के अन्दर स्थाई रुप से पेशेवर संगीतात्मक जातियों के रुप में जाने जाते हैं, और यही लोग हैं जो माण्ड गाते हैं, और लोग माण्ड को नहीं गाते है, जैसे ढोली, मिरासी, लंगे, मांगणियार ये विशेष रुप से माण्ड का नाम लेकर के गाते हैं ।

प्र.२ इनकी गायकी को हम रागदारी की गायकी कह सकते है ?

→ "शास्त्रीय संगीत कि जो निम्नावली है उसका क्षेत्र उसमें कभी भी ये बंधकर नहीं गाते पर उसमें उनको स्वतन्त्रता है । अपनी बंदिश को या अपनी चीज़ को किस तरीके से विस्तार के साथ प्रस्तुत कर सकें अतः निश्चित रुप से उनकी अपनी रागदारी होगी, उनकी अपनी स्वर सीमाएँ होगी कहाँ तक होगी एक स्वर समुदाय तक।

प्र.३ इन लोक कलाकारों की स्वर सीमाएँ किस प्रमाण पर बंधी हुई है ?

→ ये पेशेवर गायक राग का नाम लेते है, जब वो राग का नाम लेते है तो वो राग का स्वरुप उनका अपना क्या है । वो उनका अपना लोकराग है । इनके राग शास्त्रीय रागों से मेल कुछ ही राग खाते हैं, सब राग नहीं खाते है और ऐसे छूते हुए निकलते है कि आपको कष्ट होगा कि ये क्या हो गया शास्त्रीय राग गाते - गाते।

प्र.४ माण्ड किस तरह की गायन शैली है ?

→ माण्ड गायकी एक तरीके से देखा जाए तो गज़ल गायकी के समकक्ष चलने वाली रुप है जिसमे दोहे गाने की परम्परा है, मुखड़ा प्रमुख रहता है, जिसमें लोग ध्यान रखते है कि ये शुद्ध रुप से माण्ड के स्वर लगने चाहिए, आगे जब दोहा गाया जायेगा तो उसमें कलाकार की अपनी सोच है, उसकी अपनी कल्पना उसकी अपनी अदायगी है उसके कण्ठ में कौनसी स्वरावली नीहित है । माण्ड सुगम संगीत का एक स्वरुप है जिसको शास्त्रों से स्वीकृति मिल गई है जिसे एक राग के रुप में ग्रहण कर लिया गया है, जिस तरीके से अन्य रागों को अभिव्यक्त करने के लिए विशिष्ट स्वर समुदाय होता है उसी प्रकार से माण्ड का भी एक विशिष्ट स्वर समुदाय है जो ये बताता है कि ये माण्ड है। अब उसमें भी खड़ी निषाद लगी कि उतरी हुई लगी कि तीव्र मध्यम लगा। आरोही में माण्ड कैसे जायेगा, अवरोही कैसी होगी, उसके अन्दर भी फर्क करते है तो आप ये नहीं कह सकते कि ये गलत गाया गया है । क्योंकि इसमें आपको छूट है प्रयोग करने कि चंचल प्रवृत्ति का राग होने के वजह से। सारे नीयम, कायदे इसके ऊपर आप जकड़ के नहीं लगा सकते तो शास्त्रीय स्वरुप होते हुए भी सुगम स्वरुप इसका बना ही रहा है। मेरे नजरिये से केसरिया बालम कि पंक्ति गाई जा रही है तो शुद्ध माण्ड में गायेगें पर इसमें आप देंगें दोहे, माण्ड गायकी का अर्थ है दोहा गायकी, दोहा ही प्रमुख रुप से गाये जा रहें है, रचनाएँ बहुत कम ही कम मिलती है ।

दोहे अलग-अलग रुप में श्रृंगार के भी है, विरह के भी है, वीर रस के भी है, दोहे भी निश्चित नहीं होते कि, यही दोहा माण्ड में गाया जाए, एक ही दोहा अनेक तरीके से गाया जाता है।

*****

12. कु. चेतना बनावत जी-(साक्षात्कार)

उदयपुर की चेतना जी को संगीत का वातावरण विरासत में मिला। आपके पिता श्री रामनारायण जी व माता जी श्रीमती मदना जी संगीत ज्ञाता हैं, तथा वर्तमान में मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संगीत व्याख्यता के पद पर कार्यरत हैं। तथा चेतना जी स्वयं वर्तमान में बनस्थली विद्यापीठ में संगीत व्याख्यता के पद पर कार्यरत हैं। आपके अनुसार माण्ड

"माण्ड गायकी शास्त्रीय संगीत पर आधारित गायकी है, इस गायकी में लय का विशेष महत्व है।"

माण्ड गायकी ठुमरी गायकी के समान है, जिस प्रकार ठुमरी में श्रृंगारिक भाव की प्रमुखता रहती है उसी प्रकार माण्ड में भी श्रृंगारिक भाव पर जोर दिया जाता है। कलाकार अपनी कौशलता पर ही माण्ड गायन करता है।

*****

## राजस्थान के विभिन्न आकाशवाणी केन्द्र द्वारा "माण्ड" से सम्बन्धित कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया, प्रस्तुत है उन्हीं कार्यक्रमों का-विवरण !

<u>आकाशवाणी :- जैसलमेर</u>

प्रसारित कार्यक्रम :- १४/११/०२

समय :- ८.१५ सायंकाल

प्रस्तुति सहायक :- अर्जुन सिंह तवँर / डॉ. सुबोध निगम

प्रस्तुतकर्ता :- राजेन्द्र माथुर

आज भी स्वागत में विशिष्ट व्यक्तियों के आगमन पर केसरिया बालम माण्ड राग में गाया जाता है ।

माण्ड के गायक प्रायः कहा करते हैं कि वाद्य यन्त्रों में सारंगी से भी उपयोगी साज कमायचा रहता है । कमायचा में सभी तारतन्त्र होने से उसका स्वर सौन्दर्य और भी सरस मधुर प्रभावशाली तथा कर्णप्रिय रहता है । (सारंगी)

इसी तरह तबले की तुलना में मटका व ढोलक अधिक सही लगती है, इसी प्रकार बाँसुरी, शहनाई, अलगोजा, सुरणाई, रावणहत्था, मुरला, पुंगी पर भी समय समय माण्ड रागों की स्वर लहरियाँ बजाई जाती है । माण्ड गायन की परम्परा वर्तमान में लुप्त होने लगी है लेकिन बुजुर्ग गायक विशेषकर जैसलमेर क्षेत्र के मांगणियार अपने जाति के कलाकार अपने बच्चों को माण्ड गायकी का अभ्यास निरन्तर करवाने का प्रयास करते है। वाद्यों में कमायचा, ढोलक, जांगड़ा, मटका, आदि का प्रयोग विशेषकर प्रभावकारी रहता है, आजकल हार्मोनियम, सारंगी, खरताल, तबला और अनान्य वाद्यों का प्रयोग रहता है।

इससे स्पष्ट होता है कि माण्ड राग का ऐसा अमिट प्रभाव विश्व सहृदय मानव समाज पर पड़ता है तो वो सब कुछ भूल जाता है या ऐसे अलौकिक रस में डूबने या तैरने लगता है, जहाँ परमानन्द अथवा नाद ब्रह्म के साक्षात्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता है ।

*****

## आकाशवाणी : – बाड़मेर

प्रसारित कार्यक्रम :- (26/11/1993)

केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस ।

माँगणियारों द्वारा अपने जज़मानों के स्वागत में गाया जाने वाला यह गीत आज राजस्थान से बाहर दूसरे प्रदेशों में राजस्थान की लोक संस्कृति और लोक संगीत का परिलक्षित करने वाला गीत बन गया है जो माण्ड गायकी के नाम से जाना जाता है । लोक गायन शैली माण्ड लोक संगीत से इतर कुछ शास्त्रीय पुट लिए हुए है इसलिए तो सुनने वालों पर माण्ड गायकी कुछ ऐसा प्रभाव डालती है कि सुनने वाले उसमें डूब कर सब कुछ भूल जाते हैं और संगीत के ऐसे समुद्र में हिलोरे लेने लगते हैं जहाँ परम आनन्द के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचता । ............... केसरिया बालम ..............

हमारी इस सांस्कृतिक घरोहर को संरक्षित करने के प्रयास कई संगठनों ने किए हैं पश्चिमांचल में लोक वाद्यों के संरक्षण और लोक वाद्य का निर्माण को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । बाड़मेर केन्द्र के जिला युवा समन्वयक भुवनेश जैन माण्ड गायकी को क्षेत्र विषयक और भौगोलिक परिस्थितियों से सम्बन्धित मानते हैं ।

बाड़मेर के शिव क्षेत्र से लेकर जैसलमेर और जैसलमेर से बीकानेर जो पट्टी है पूरी वो माण्ड क्षेत्र कहलाती है । ओर माण्ड क्षेत्र का जो अपना जै विविधता है वो भी हमारे दूसरे क्षेत्र से अलग करती है । सारा लोक जीवन लोक संगीत और जैविविधता भौगोलिक क्षेत्र को ध्यान में रखकर अपना अलग अलग रुप लिए हुए है । और यहाँ सरस्वती नदी भी बहती थी और वेदों की ऋचाएँ भी जहाँ माण्ड क्षेत्र है वहीं रची गई हैं।

माण्ड का शब्दिक अर्थ है सीमान्त अतः कहा जा सकता है कि पश्चिमी सीमान्त में जन्मी यह शैली क्षेत्र विषयक के कारण ही माण्ड कहलाई । बाड़मेर जिले में कई गाँव लंगा और मांगणियारों के है – इनका पुश्तैनी कार्य गायन और वादन रहा है अपनी इस विरासत के बूते देश ही नहीं विदेश में भी इस धरा का नाम रोशन करने वाले अनेक कलाकार हुए है।

वयोवृद्ध गायक राणेखाँ का मानना है कि माण्ड की शुरुआत जैसलमेर से हुई है ।

राणेखाँ :

*लंगा कलाकार राणेखाँ व उनके सुपुत्र साक्षात्कार देते हुए।*

राजा महाराजा पधारते हैं खुशी में गीत - पधारो म्हारे ............

किसी ख़ास इलाके का है यह माण्ड राग ?

ये जैसलमेर, इलाके का है, मुख्य रुप से जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर और पाकिस्तान का कुछ भू भाग माण्ड क्षेत्र कहलाता था, यहीं माण्ड गायकी जन्मी, फल-फूली और आज हिन्दूस्तान ही नहीं पूरे विश्व में राजस्थान की पहचान बन गई ।

कुटल खाँ आकाशवाणी के कलाकार :

माण्ड एक ही परन्तु जैसलमेर बोली की वजह से राजस्थान में ही अलग-अलग हिस्सों की माण्ड गायकी में फर्क पैदा हुआ है ।

माण्ड : जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर (अमरकोट) Sung by Kutalkhan

यूँ तो माण्ड मुख्य रुप से स्वागत में गाया जाने वाला गीत है लेकिन इसके दूसरे रुप भी देखने को मिलते हैं । जैसलमेर जिले की माण्ड है तो उसमें गाया जाता है मूमल।

(मूमल ) गफूर खाँ माँगणियार :

मूमल का प्रणय निवेदन हो अथवा महेन्द्र सोडा और मारवण के ढोला की कथा हो या फिर कुरंजा के संदेशा ले जाने की विनती हो देश प्रेम हो या शौर्य प्रदर्शन । इस सभी ने स्वागत में गाई जाने वाली इस गायकी को विस्तार दिया है ।

यहाँ तक की पश्चिमी सीमान्त के लोकगीतों की सभी प्रवृत्ति पर माण्ड का निम्नाधिक प्रभाव देखने को मिलता है । इस तरह माण्ड आज मरुप्रदेश की स्वतन्त्र रागिनी का रुप ले चुकी है जो अपने आप में विविधता लिए हुए अनूठी है ।

*****

<u>आकाशवाणी - जयपुर :</u>

माण्ड गायकों ने वीर रस के ऐतिहासिक वीरता का संचार किया गया है । राजा की लोक गाथा ढाढाला सूर में शूकर व राजा के युद्ध का वर्णन किया गया है ।

पंडित शिवराम :

शूवरिया धीमो मुगरो चाल रे
शूवरिया धीमो मुदरो ...........
चाल रे माखर रा डोलिया रे
भाखरिया ढोलिया
शूवरिया .................
भाखरा धोलिया, भाखरा रा धोलिया
भाखरा धोलिया, धीमों मुदलो चाल रे । धीमो ..............

अपने गीतों मे शिकार का वर्णन खूबसूरती से किया है ।
नायिका अपनी दासी से अपने प्रियतम द्वारा शिकार खेलने का वर्णन कर रही है ।

ललिता बाई :

दासी हरिया ढूगंरा ने
आलीजा दरमें शिकार ............
दासी हरिया
सूर थाने पूजती सौ भर मोति को थाल, घड़ी एक मोड़ा ऊगजो,
म्हारो आलीजा रमसै शिकार दासी हरिया
ऊड़तो आवे घोड़लो, सो मुड तो आवे अंग,
इन घोड़लो असवार ने देशा घणो[२] रंग
दासी हरिया ................

कालान्तर में पेशेवर गायकों नये साहित्य का सृजन कर क्षेत्र विशेषक माण्ड शैली को जोड़ा जैसे बीकानेरी माण्ड, जैसलमेरी माण्ड, नागौरी माण्ड ।

बनारसी दास (नागौरी माण्ड) :

नायिका प्रियतम से अपने माइके जाने का आग्रह करती है, कहती है हे प्रियतम मेरा माइका आपका ससुराल है आप चलेगें तो आपके साथ आपके भाइयों का समूह है और मेरे साथ मेरी भाभियों का सानिध्य है । प्रिय आप घोड़ों पे सवार होकर जायेगें पर हमें तो नागौरी बैलों से जुती गाड़ी ही अच्छी लगती है ।

चालो चालो नागांरा रे देश

सयो ऐ म्हारी

चालो ................

ऐ जि म्हारो पिहरियो म्हारो जियो

सासरियो जी म्हारा घर

चालो

रतन राणा : Sung by Gavridevi ji

म्हारा रतन राणा,

म्हारा अमराणा ने घुडल्या ने

हाजी म्हारा रतन राणा

Some of the famous folk songs. Renuel, Ratan Rana Chhapper Purana. Jallal, Tambura beside the popular ragas. Maand singers have also sung other ragas like jogiya and kalingda. This maand is sung by muneer khan.

सुणो तो जी राजन म्हारा

जाली रे झरोखे,

मांगणिये पधारो जी......

सुणो तो जी

Rajasthan the folk style of singing also popular in Malva and Gujrat. From the golden essence of Rajasthan rises the musical notes of classical music. This is a unique gift of Rajasthan. The komal madhyam and teevra Combination of notes of the maand, probibe greatification and happiness of the mind.

मारु धारे देश में, निपजे तीन रतन, एक ढोला दूजी माखण तीजो कसूमल रंग ।

*****

आकाशवाणी - उदयपुर

प्रसारित कार्यक्रम : ८/८/२००२.

मनुष्य के हृदय में सबसे पहले स्वरों की उत्पत्ति हुई बाद में शब्दों की । सुख व दुखों के क्षणों की उसने गुनगुनाकर ही व्यक्त किया ।

जब स्वरों व मन की भावनाओं का मेल हुआ तो जन्म हुआ संगीत का । धीरे-धीरे मनुष्य सामाजिक हुआ, पारिवारिक हुआ भाषा ने अपना स्वरुप लिया और प्रादुर्भाव हुआ लोक संगीत का हर प्रांत के लोकगीत लोक समुदाय की धरोहर है उसमें बसती है समस्त जन मानस की आत्मा । यहाँ व्यक्ति विशेष की छाप नहीं रहती, ये तो पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाए जाते हैं और कालान्तर में लोक की सम्पत्ति हो जाते हैं । राजस्थान का इतिहास जितना गौरवपूर्ण है उतना ही गौरवशाली है यहाँ कि मिट्टी से जुड़े गीत, जिनके शब्द हृदय को तरंगित करके आन्तरिक मस्ती और उमंग से भर देते हैं यहाँ किसी प्रकार का छल कपट नहीं है तो यथार्थ भावों की अभिव्यक्ति जिसमें आती है सुहार्दता, सहानुभूति, प्रेम, दया, ममता, संवेदना जैसे दैविय गुण । सही में लोक जीवन से लोक गीतों का अंश निकाल दें तो जीवन हो जायेगा शून्य ।

स्वर रचना की दृष्टि से राजस्थान गायन शैली की कई गायनशैलियाँ हैं, वैज्ञानिक विश्लेषण से यह भी पता लगाया गया है कि अमुक गीत किस परिस्थिति के बीच गुजरा और उसके स्वर-रचना के पीछे किन भावनाओं की प्रधानता है इस दृष्टि से फली-फूली लोक गायन शैलियाँ ।

कुछ प्रारम्भिक अवस्था कि आदिम जातियों द्वारा गाए जाने वाले गीत हैं और कुछ ग्रामीण जातियों द्वारा सामूहिक रुप से विशेष प्रसंग पर गाये जाने वाले गीत जैसे - काहे कुदाली माथे टेकरो ......... और कुछ ग्रामीण-शहरी जातियों द्वारा सामूहिक रुप में प्रसंग पे गाये जाने वाले विशेष प्रसंग वाले गीत । आई-आई सावणिये री तीज ............ लोक गीत

ऐसी भी है जो साधु-सन्तों द्वारा गाये जाते है । व्यवसायिक लोक गीत जिनकी आजीविका का साधन ही लोक गीत है जैसे – कामण, तुरंर्ग, कलंगी ।

राजस्थान की एक समृद्ध और प्रधान गायन शैली है माण्ड गायकी । दरअसल लोक गीतों कि ध्वनियों से ही शास्त्रीय संगीत की नींव जब ये ध्वनियाँ बहुत अधिक प्रचलित होती हुई तो संगीत में रुचि रखने वाले कलाविधों ने उसे विशिष्ट रुप से सजाया, सवाँरा व अलंकृत किया और इस अनूठी गायन शैली का नामकरण पड़ा "माण्ड" ।

बीकानेर के डॉ. जयचन्द्र शर्मा जी के अनुसार :-

माण्ड एक लोक गायन शैली है । मरुदेश को प्रारम्भ में माण्ड या जंगल देश भी कहते थे । इस प्रदेश में गाई जाने वाली शैली को माण्ड कहा जाता है । माण्ड राग भी है उपरागिनी भी है । इसका इतिहास अलग से कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं ।

राजस्थान में माण्ड गायकी के उत्पत्ति स्थान जहाँ जैसलमेर को माना जाता है वहीं ये गायकी जोधपुर, जयपुर, मेवाड़ आदि क्षेत्रों में प्रचलित है । प्रमुख रुप से राजदरबारों, महफिलों में गायी जाने वाली गायकी – माण्ड, राजा-सामन्तों से जुड़ी होने के कारण प्रधान गायकी रही है ।

हो थाने पखिरों ढुलावुँ सारी रैन ...........

म्हारा मीठा मारु – यांही रहियों ऽ सा

अपनी मन बसियों को सुख भरी नींद देने के लिए गौरणी कहती है मैं आपके लिए रात – भर पंखा करुंगी । साथ ही मीठी मोहक बात करुंगी । शास्त्रीय संगीत के निकट होने के कारण माण्ड – गायकी में श्रुतियों और मूर्च्छनाओं का भी प्रयोग होता है, गायकी विलम्बित जरुर है लेकिन ऊचें स्वरों में होने के कारण खूब मिलती है, इसका सम बड़ी बेकरारी व इंतजार के बाद आता है ।

म्हारा साँचोड़ा मोती हालो तो ले चाल्युं मरुधर देश .............

राजा महेन्द्र अपने देश आने को कहता है कि उसके यहाँ सच्चे मोती ही बसते है गौरी व प्रियतम के बीच में प्रेरक संवाद के बानक तो चौक में पड़े हैं और बाजारां में मोतियों की कमी नहीं जैसा रुप तुम्हें कहाँ मिलेगा ।

साहित्य से भरपूर श्रृंगार रस तो माण्ड गायकी की जान है जहाँ संयोग श्रृंगार है वही वियोग श्रृंगार, विरह कि कथा - व्यथा व्यक्त करता है लेकिन राजाओं के शोर्य को माण्ड शैली ने अमर किया है । माण्ड गायकी कि उत्पत्ति के बारे में स्वरुप के बारे में अपनी ही गायकी के साथ हैं मेवाड़ के प्रसिद्ध गायक ।

श्री कृष्ण कुमार देहलवी जी :

माण्ड शैली एक अलग शैली है, जिसमें शास्त्रीयता का पुट होता है । माण्ड एक राग है और उनके ऊपर जितने भी शब्दों की रचना कलाकारों ने कर ली, जितने भी रजवाड़ों के आश्रित कलाकार होते थे उन्हीं द्वारा इसकी उत्पत्ति की गई । शब्दों की उत्पत्ति रजवाड़ों में राजाओं की प्रशंसा के लिए कलाकार गाते थे व राज्य, को सम्बोधित करके इस कला को बढ़ाते थे । माण्ड गायकी कठिन गायकी है व शास्त्रीय संगीत का जानकार ही इसे गा सकता है । लोक गीत आम तौर पर कोई भी गा बजा सकता है, किन्तु माण्ड - गायकी में विशिष्ट ताले होती है - जैसे - चौताला, गांठ चौताला, दीपचन्दी । आलाप, तान, मीड़, मुर्की आदि इस गायकी की विशेषता है । माण्ड गायन का भविष्य उज्जवल है । माण्ड गायकी को गाना मुश्किल है ।

बात कुछ अधूरी सी रह जाएगी, मेवाड़ माण्ड गायकों की बात करें व मेवाड़ की माटी में जन्मी मांगी बाई आर्या की बात ना करें ।

व्यथितपन के समयताओं करुणा, उल्लास, विरह, मिलन और स्मृति रेशमी धागों से जुड़े जीवन के अनेक सन्दर्भों को अपने स्वरों में पिरोदेने वाली मांगी बाई को संगीत का वातावरण विरासत में ही मिला । राज्यस्तरीय पुरुस्कार से नवाज़ी गई मांगी बाई ने अपनी गायन शैली में खटके व मुर्की का प्रयोग कर माण्ड में नई माण्ड को नई ताज़गी प्रदान की

है । माण्ड उनको छूती हुई उनकी गायन शैली आश्चर्य जनक सम्मोहक वाली है । आयो आयो ...............

माण्ड गायकी के स्वर लहरियों ने मन की रागात्मक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है, हमारी ये अनुपम धरोहर है - स्व. ओंकार नाथ ठाकुर ने कहा है संसार में राजस्थान की भाषा संस्कृति और पोषाक को जो आदर दिया गया है वैसा ही इस गायकी को मिलेगा, लेकिन क्या ऐसा सम्भव है, आज की दशा को देखते व सुनते हुए ये प्रश्न मन में है क्या ये स्वरुप कायम रह सकेगा ।

*****